भारत में जनसँख्या का वितरण और घनत्व (बीए भूगोल पार्ट-2, पत्र-III, इकाई-IV)

<u>प्रश्न: भारत की जनसँख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारकों की चर्चा करें ।</u>

अथवा

<u>भारत के जनसँख्या वितरण और घनत्व को समझाएं ।</u>

उत्तर: भारत जनसंख्या की दृष्टि से चीन के बाद दूसरा सबसे बड़ा देश है । सन 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की आबादी 121 करोड़ है । अगर हम तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो भारत विश्व की आबादी का 17.7% अपने पास रखता है जबकि क्षेत्रफल में मात्र 2.42% है । भारत की आबादी की विशालता का अंदाज इसी से लगा सकते हैं कि इसकी जनसंख्या उत्तर अमेरिका, दक्षिण अमेरिका तथा ऑस्ट्रेलिया के कुल जनसंख्या के बराबर है । इस प्रकार भारत में संसाधन के ऊपर जनसंख्या का ज़बरदस्त दबाव है । इस जनसंख्या को हम या तो समस्या कह सकते हैं या मानव संसाधन ।

जनसंख्या का वितरण

भारत में भी विश्व के अन्य देशों की तरह ही जनसंख्या का काफी असामान वितरण है । मानचित्र में हम देख सकते है कि कुछ भाग अत्यधिक घने बसे हैं जबकि कुछ भाग अत्यधिक विरल ।

भारत में जनसंख्या के वितरण को प्रभावित करने वाले कारक

भारत में जनसंख्या के वितरण को निम्नलिखित कारक प्रभावित करते हैं
भौतिक कारक : जिसमें भू-आकृति, जलवायु, मृदा, जल की उपलब्धता आदि आते हैं
सामाजिक-आर्थिक-ऐतिहासिक कारक : इसके अंतर्गत सामाजिक, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, औद्योगीकरण, नगरीकरण, सांस्कृतिक मान्यताएं इत्यादि आते है ।

भू आकृति: इसके अंतर्गत भूमि की ढलान और ऊंचाई आती है । सिंधु गंगा के मैदानी क्षेत्र में भूमि समतल है और उपजाऊ भी । तटीय भागों में भी समतल कृषि योग्य भूमि मिलती है, इस कारण यहां जनसंख्या का अत्यधिक जवाब है जबकि पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में जनसंख्या विरल पाई जाती है ।

जल की उपलब्धता: जल की उपलब्धता भी जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित करता है और यही कारण है कि पूरे विश्व की महान सभ्यताओं का जन्म नदी घाटियों में ही हुआ क्योंकि यह नदियां उन्हें जीवन के लिए जल प्रदान करती थी । भारत में सिंधु, गंगा, ब्रह्मपुत्र, गोदावरी, कावेरी इत्यादि महत्वपूर्ण नदियों के किनारे प्राचीन काल से ही नगरों का विकास होता रहा ।

जलवायु: जहां की जलवायु अनुकूल होती है वहां जनसंख्या अधिक बसती है जबकि जहां की जलवायु प्रतिकूल होती है वहां जनसंख्या बहुत बिरल पाई जाती है, जैसे राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र में व् लद्दाख के ठंडे मरुस्थल में कम जनसंख्या पाई जाती है जबकि समुद्र तटीय इलाके में जहां सम जलवायु पाई जाती है वहां घनी जनसंख्या पाई जाती है ।

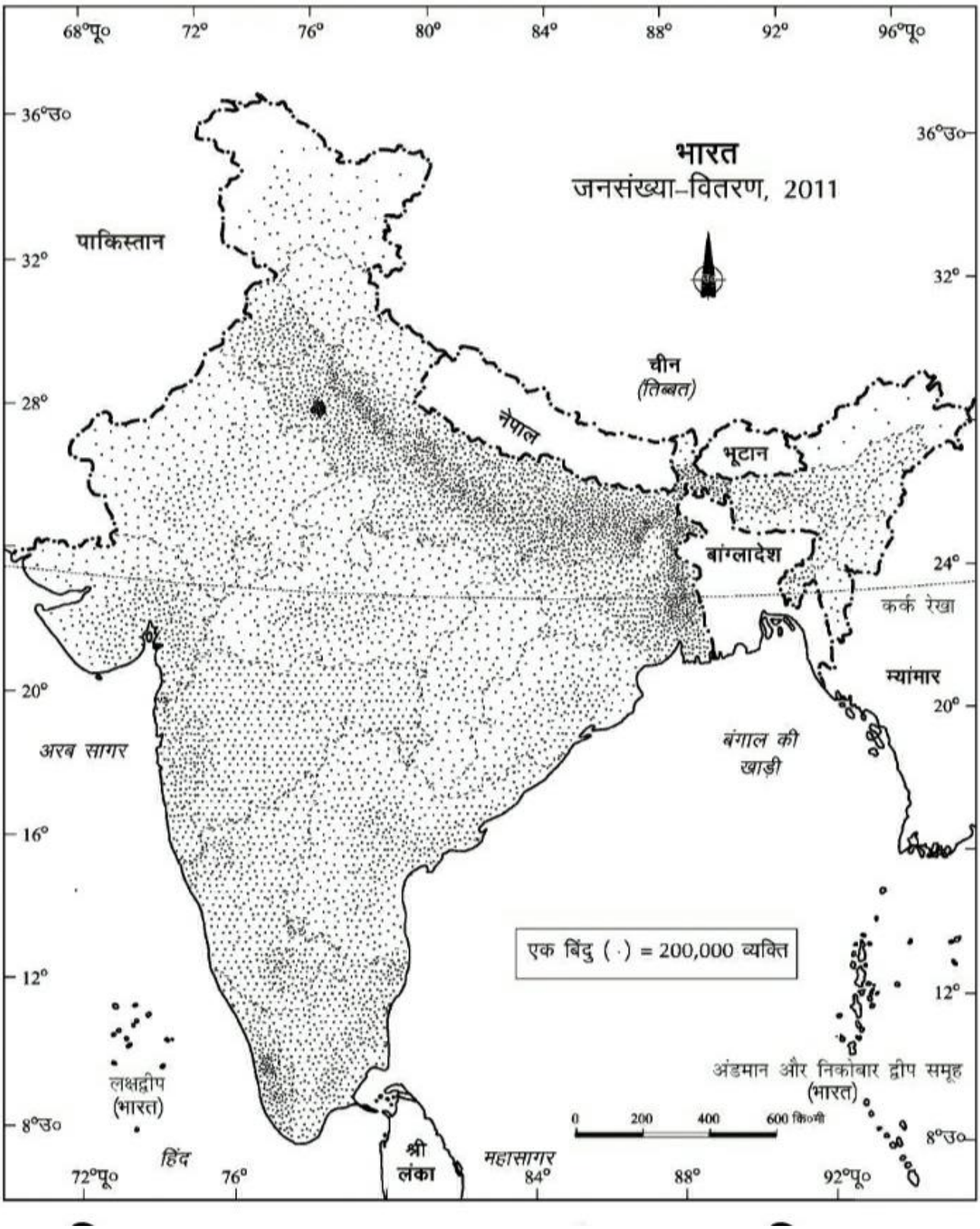

चित्र: भारत में जनसँख्या का वितरण (एन सी ई आर टी)

मिट्टी: मिट्टी भी जनसंख्या के घनत्व को प्रभावित करती है । जहां की मिट्टी उपजाऊ है वहां अधिक जनसंख्या है जबकि जहां की मिट्टी बंजर है, अनुपजाऊ है वहां बहुत कम जनसंख्या पाई जाती है । जैसे भारत की नदी घाटियों तथा समुद्र तटीय इलाकों में जलोढ़ मृदा पाई जाने से वहां कृषि अच्छी होती है और जनसंख्या अधिक पाई जाती है ।

सामाजिक - आर्थिक व ऐतिहासिक कारक

इसके अंतर्गत स्थाई कृषि का विकास, मानव बस्ती का प्रतिरूप और यातायात के विकास आते हैं । ऐसा माना जाता है कि जहां नदियों के मैदान है और तटीय क्षेत्र हैं वहां अधिक जनसंख्या निवास करती है क्योंकि वहां भूमि और जल जैसे प्राकृतिक संसाधन आसानी से उपलब्ध है जिसमें कृषि कार्य किया जा सकता है ।

मुंबई - पुणे औद्योगिक क्षेत्र उपनिवेश काल से ही व्यापारिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए । इसी प्रकार अंग्रेजो के द्वारा विकसित कोलकाता, मद्रास, पांडिचेरी आदि धीरे धीरे घनी जनसंख्या के केंद्र बन गए क्योंकि यहां औद्योगिक विकास जबरदस्त हुआ ।

इसी प्रकार छोटानागपुर पठारी प्रदेश में खनिजों की उपलब्धता के कारण कई नगर विकसित हो गए जैसे टाटा, बोकारो, धनबाद इत्यादि । यहां पर इन खनिजों पर आधारित उद्योगों की स्थापना हुई जिसने जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित किया ।

जनसंख्या का घनत्व

प्रति का क्षेत्रफल में रहने वाली जनसंख्या को ही जनसंख्या घनत्व कहते हैं । भारत में जनसंख्या घनत्व के आधार पर हम इसकी आबादी के वितरण को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं । 2011 के जनगणना के अनुसार भारत का जनसंख्या घनत्व 382 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है परंतु बिहार जैसे राज्य की जनसंख्या घनत्व 1102 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है जबकि अरुणाचल प्रदेश राज्य की जनसंख्या घनत्व 17 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है । इस प्रकार हम जनसंख्या घनत्व के आधार पर भारत के राज्यों को तीन प्रकार से विभाजित कर सकते हैं:

उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र
मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र
निम्न जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र

1. **उच्च जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र**: इसमें 500 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से अधिक वाले राज्य आते हैं । इन राज्यों के उच्च जनसंख्या घनत्व का कारण है उपजाऊ भूमि, भरपूर वर्षा, अच्छी कृषि, धान की कृषि, सम जलवायु, नगरीकरण और आधुनिकीकरण, रोजगार के अवसर इत्यादि । यह राज्य हैं: उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, केरल, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, पांडिचेरी, चंडीगढ़, दादर नगर हवेली, दमन एवं दीव, लक्षद्वीप ।
2. **मध्यम जनसंख्या घनत्व वाले क्षेत्र:** इसमें वैसे राज्य आते हैं जिनका जनसंख्या घनत्व 100 से 500 के बीच है । इसमें उच्च जनसंख्या घनत्व वाले राज्यों की अपेक्षा सभी कारक थोड़ी कम

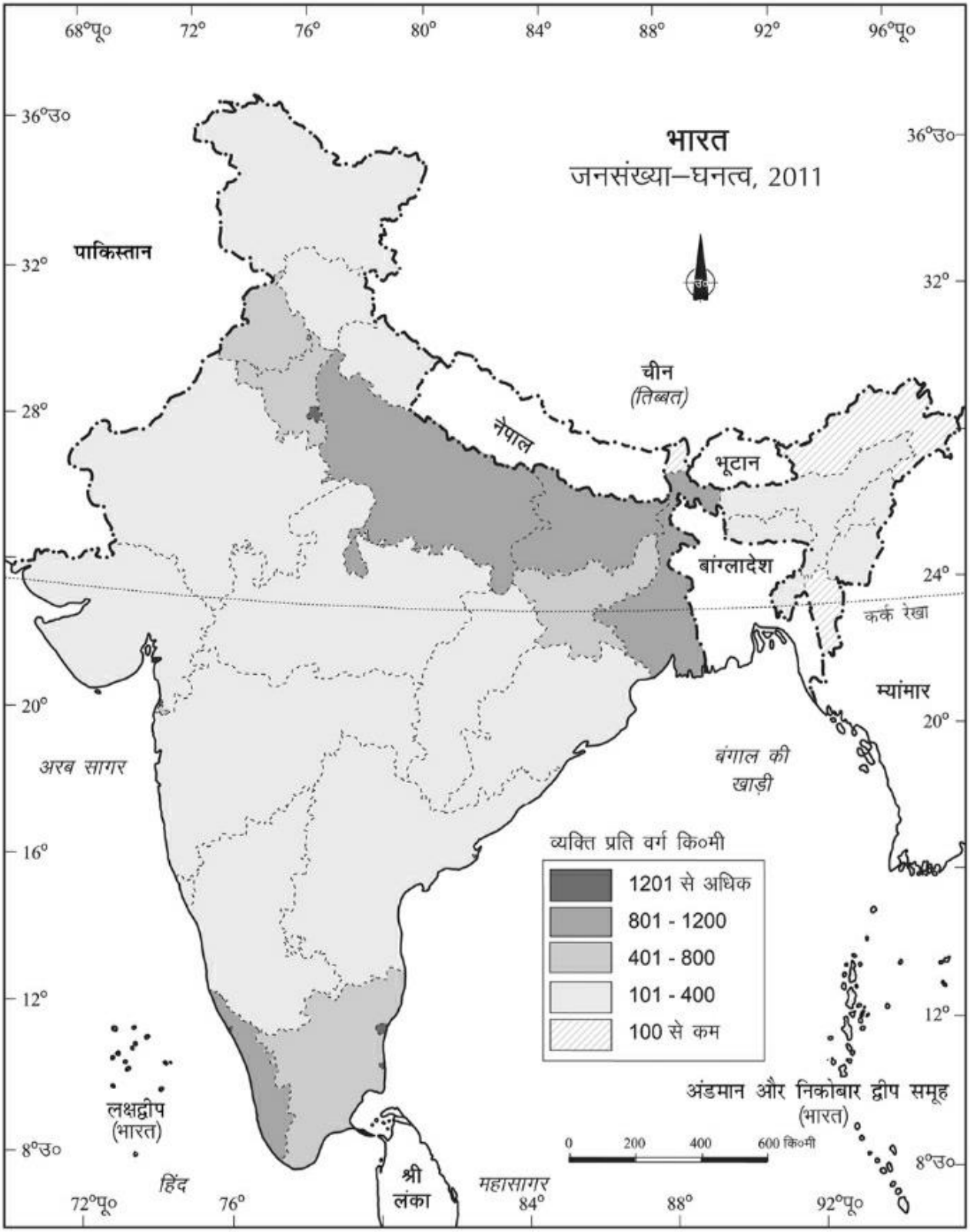

चित्र: भारत में जनसँख्या घनत्व (एन सी ई आर टी)

मात्रा में उपस्थित है । यह राज्य हैं: महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, कर्नाटक, गुजरात, उड़ीसा, झारखंड, असम, छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, त्रिपुरा, गोवा ।

3. **निम्न जनसंख्या घनत्व वाला क्षेत्र:** इसमें वैसे राज्य आते हैं जिसका जनसंख्या घनत्व 100 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर से कम होता है । इन राज्यों में जनसंख्या को प्रभावित करने वाले सभी कारक विपरीत परिस्थिति उत्पन्न करते हैं जैसे वर्षा की कमी, कठिन जलवायु, कृषि योग्य भूमि की कमी, नगरीकरण और औद्योगीकरण की समस्याएं, उबड़ खाबड़ भूमि, जल की अनुपलब्धता, इत्यादि । ये राज्य हैं: अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम, अंडमान निकोबार दीप समूह ।

इस प्रकार इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत एक विशाल आबादी वाला देश है जहां जनसंख्या का भारी दबाव उसकी भूमि के ऊपर है और यह जनसंख्या कई प्रकार की समस्याएं पैदा करती हैं परंतु यदि इस को सही दिशा निर्देशन दिया जाए तो यही मानव संसाधन के रूप में बदल जाएगी ।

- सन्दर्भ: महेश वर्णवाल, डी आर खुल्लर, NCERT, INTERNET

- बोलेन्द्र कुमार अगम, सहायक प्राध्यापक भूगोल, राजा सिंह कॉलेज सिवान